लघुता एवं प्रभुता

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

लघुता का अर्थ है– हल्कापन, विनम्रता, अच्छाई, निरहंकारता। लघुता मानव का एक बहुत अच्छा गुण है। प्रभुता का अर्थ है– अहंकार। जिस व्यक्ति में लघुता होती है, जिस व्यक्ति में विनम्रता होती है, जिस व्यक्ति में निरहंकारता होती है, उस व्यक्ति का सामाजिक विकास सांस्कृतिक विकास बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति सहनशील और दूसरों को सम्मान देने वाला होता है। किन्तु जिस व्यक्ति में अहंकार होता है उसका धीरे–धीरे पतन हो जाता है। भगवान् श्रीरामचन्द्र और लंकापति रावण का दृष्टान्त इस संबंध में विचारणीय है। जब भगवान् राम और रावण की सेनाएं आमने–सामने आकर के खड़ी हुई तो भगवान् राम पैदल, बिना अस्त्र–शस्त्र के भालू–बन्दरों की सेना के साथ खड़े थे। दूसरी तरफ रावण रथ पर सवार और चतुरंगड़ी सेना के साथ अहंकार से युक्त युद्ध क्षेत्र में भगवान् राम को ललकार रहा था। यह युद्ध लघुता और प्रभुता का युद्ध था, जिसमें लघुता विजयी हुई और प्रभुता पराजित। लघुता का गुण शिक्षा, विद्या और दूसरों को सम्मान देने से प्राप्त होता है। विद्या को प्राप्त करने के बाद भी यदि लघुता नहीं आई तो समझना चाहिए कि विद्या का वास्तविक मूल्य अभी नहीं प्राप्त हुआ। जिस समय वृक्ष में फल आता है तो वृक्ष की शाखाएं नम जाती है। इसी प्रकार विद्या और विनय से सम्पन्न व्यक्ति नम्र बन जाता है। परन्तु कुछ लोग ऐसे है कि विद्या की प्राप्ति के बाद भी उनमें नम्रता न आकर अहंकार आ जाता है और यह अहंकार उनके विनाश का कारण होता है। वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत और आगमों में यही बताया गया है कि मानव को विनयशील होना चाहिए। जिस समय रावण मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ था उस समय भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि रावण बहुत ज्ञानी है। उसके पास जाकर कुछ ज्ञान की शिक्षा लीजिए। लक्ष्मणजी जब अपने बड़े भाई की बात स्वीकार कर रावण के पास गये और उसके सिर के पास खड़े होकर ज्ञान प्राप्त करना चाहा तो रावण ने अपनी आंखे ही नहीं खोली। लक्ष्मणजी निराश होकर लौट आये और भगवान् राम को पूरा वृतान्त बता दिया। तब भगवान् राम ने लक्ष्मण से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के लिए लघुता और विनम्रता आवश्यक

है। पुनः जाकर रावण के पैर के पास खड़े होकर ज्ञान की याचना करना। लक्ष्मणजी जब रावण के पास गये और उसके पैर के पास खड़े हुए तो रावण ने लक्ष्मण को अनेक विद्याओं का ज्ञान दिया। इस प्रकार लघुता जीवन के हर पड़ाव पर काम आती है। लघुता से जुड़ाव होता है और प्रभुता से बिखराव। एक परिवार में अनेक सदस्य पारस्परिक सौहार्द के साथ रहते है। इसका मुख्य कारण है कि बड़े लोग छोटों को स्नेह देते है और छोटे लोग बड़ों को आदर और सम्मान की दृष्टि से देखते है। इससे पारस्परिकता बनी रहती है, एक दूसरे का प्रेम और स्नेह परिवार के सभी सदस्यों को मिलता रहता है, जिससे परिवार में एकजुटता बनी रहती है और परिवार उन्नति करता है, परिवार में बिखराव नहीं आता। यही बात समाज और राष्ट्र के संबंध में भी विचारणीय है। समाज में जहां हित चिंतन की बात हो समाज के हर सदस्य को इसके लिए मिलजुलकर कार्य करना चाहिए। विकास के किसी काम में समाज के हर व्यक्ति को मिलकर आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। राष्ट्र के संबंध में भी यह विचारणीय है। राष्ट्र को आंतरिक और बाह्य दोनों दृष्टियों से संबंध बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। राष्ट्राध्यक्ष का कर्त्तव्य होता है कि वह विश्व के अनेक देशों के साथ मित्रता का व्यवहार करें, पड़ोसी देशों के साथ सहअस्तित्व और भाईचारे का संबंध होना चाहिए। जिससे देश को बाह्य खतरों से सुरक्षा मिल सके। राष्ट्र के अंदर अनेक जातियों के लोग, अनेक धर्मों के लोग और अनेक सम्प्रदायों के लोग रहते है। सभी का यह कर्त्तव्य है कि वे एक–दूसरे के साथ मिलजुलकर के रहे, जिससे उनके बीच किसी प्रकार का मनमोटाव न हो। जीवन में तीन चीजें आवश्यक है– ज्ञेय, हेय और उपादेय। ज्ञेय का अर्थ है– जानना। हमें जहां कही से भी अच्छी बाते हो उसे विनम्रता से ग्रहण कर लेना चाहिए। हेय का तात्पर्य है– बुराईयों का त्याग। उपादेय का अर्थ है– जीवन के लिए उपयोगी और समाज के लिए उपयोगी जो हमारे कर्त्तव्य है उनका हम सच्चाई से पालन करें। ऐसा करने से समाज का विकास होता है। प्रेम एक ऐसा रसायन है जो समाज के हर व्यक्ति को एक सूत्र में बांधकर रखता है। समाज और राष्ट्र की एकता इसी सूत्र से बंधी हुई है। कबीरदासजी ने लिखा है–

पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढ़ाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय।।

अर्थात् बहुत से शास्त्रों का अध्ययन कर लेने के बाद भी यदि उसके भाव को जीवन में नहीं उतारा गया तो ऐसा ज्ञान निरर्थक होता है। इससे अच्छा तो ढ़ाई अक्षरवाला प्रेम शब्द है जो कि जीवन में सदैव समरसता को बनाये रखता है और पूरे समाज को जोड़कर के रखता है। प्रेम एक ऐसा तत्व है जिसके रहने पर बुद्धि आस्तिक्य भाव से युक्त हो जाती है। सर्वत्र आत्मवत् भाव दिखलाई देने लगता है। स्व और पर का भेद मिट जाता है। क्रोध, मान, माया और लोभ का सर्वथा विनाश हो जाता है। इन चारों तत्वों में से यदि एक का भी प्रवेश अंद हो जाये तो अन्य तत्व अपने आप प्रवेश कर जाते है और बुद्धि को नकारात्मकता की ओर ले जाते है। इसलिए लघुता का भाव मानव को अपने अन्दर धारण करना चाहिए। लघुता स्वयं प्रभुता को प्रदान करा देती है।